

Bihar Board Class 12 English Notes Chapter 2 Bharat is My Home

DR ZAKIR HUSAIN (1897- 1969), born in Hyderabad, was one of our greatest freedom fighters as well as an eminent educationist. Dr. Husain became the President of India in 1967. Earlier he had served as the Governor of Bihar. 'Bharat is My Home' is an extract from the speech he gave in 1967 after taking the oath as President. In his first speech as the President of India, Dr Zakir Husain pledges himself to the service of the totality of India's culture".

डॉ ज़ाकिर हुसैन (1897- 1969), हैदराबाद में पैदा हुए, हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक होने के साथ-साथ एक प्रख्यात शिक्षाविद् भी थे। डॉ. हुसैन 1967 में भारत के राष्ट्रपति बने। इससे पहले उन्होंने बिहार के राज्यपाल के रूप में कार्य किया था। 'भारत मेरा घर है' 1967 में राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के बाद दिए गए भाषण का एक अंश है। भारत के राष्ट्रपति के रूप में अपने पहले भाषण में, डॉ जाकिर हुसैन ने भारत की संस्कृति की समग्रता की सेवा के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया।

BHARAT IS MY HOME

Paragraph 1. I must confess that I am overwhelmed by the trust my people have placed in me by electing me to the highest office in the land.

मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि देश के सर्वोच्च पद के लिए मुझे चुनकर मेरे लोगों ने मुझ पर जो विश्वास किया है, उससे मैं अभिभूत हूँ।

Paragraph 2. Dr Radhakrishnan brought to the Presidency a mental equipment, a degree of erudition and wealth of experience rarely to be found anywhere. During a lifetime devoted to the pursuit of knowledge and truth, he has done more than probably any other man to bring out and explain Indian philosophical thought and the oneness of all true spiritual values. He has never lost his faith in the essential humanity of man and he himself has never ceased to champion the right of all men to live in dignity and with justice.

डॉ राधाकृष्णन प्रेसीडेंसी में एक मानसिक उपकरण लाए, एक डिग्री की विद्वता और अनुभव का खजाना शायद ही कहीं पाया गया हो। ज्ञान और सत्य की खोज के लिए समर्पित जीवन के दौरान, उन्होंने भारतीय दार्शनिक विचार और सभी सच्चे आध्यात्मिक मूल्यों की एकता को सामने लाने और समझाने के लिए शायद किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक किया है। उन्होंने मनुष्य की आवश्यक मानवता में अपना विश्वास कभी नहीं खोया है और उन्होंने स्वयं कभी भी सभी पुरुषों के सम्मान और न्याय के साथ जीने के अधिकार का समर्थन करना बंद नहीं किया है।

Paragraph 3. I can only assure you that I enter this office in a spirit of prayerful humility and total dedication. I have just taken the oath of loyalty to the Constitution of India. It is the Constitution of a comparatively new State which its free citizens have, for the first time in

history, given to themselves. It is the young State of an ancient people who, through the long millennia and through cooperation of diverse ethnic elements, have striven to realise timeless, absolute values in their own peculiar way. I pledge myself to the service of those values. For, though some concrete realisation of a value may become inadequate with the change of circumstance, the value remains eternally valid and presses for newer and fresher realisation. The past is not dead and static, it is alive and dynamic and is involved in determining the quality of our present and the prospects of our future.

मैं आपको केवल आश्चर्य कर सकता हूँ कि मैं प्रार्थनापूर्ण विनम्रता और पूर्ण समर्पण की भावना से इस कार्यालय में प्रवेश कर रहा हूँ। मैंने अभी-अभी भारत के संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ ली है। यह एक तुलनात्मक रूप से नए राज्य का संविधान है जिसे इसके स्वतंत्र नागरिकों ने इतिहास में पहली बार खुद को दिया है। यह एक प्राचीन लोगों का युवा राज्य है, जिन्होंने लंबी सहस्राब्दियों से और विभिन्न जातीय तत्वों के सहयोग के माध्यम से, अपने विशिष्ट तरीके से कालातीत, पूर्ण मूल्यों को महसूस करने का प्रयास किया है। मैं खुद को उन मूल्यों की सेवा के लिए वचनबद्ध करता हूँ। क्योंकि, हालांकि, परिस्थिति के परिवर्तन के साथ मूल्य की कुछ ठोस प्राप्ति अपर्याप्त हो सकती है, मूल्य हमेशा के लिए मान्य रहता है और नए और नए अहसास के लिए दबाव डालता है। अतीत मृत और स्थिर नहीं है, यह जीवित और गतिशील है और हमारे वर्तमान की गुणवत्ता और हमारे भविष्य की संभावनाओं को निर्धारित करने में शामिल है।

Paragraph 4. The process of its constant renewal is, indeed, the process of growth of national culture and national character. It is the business of education, as I see it, to minister this constant renewal; and I may be forgiven the presumption that my choice to this high office has mainly, if not entirely, been made on account of my long association with the education of my people. I maintain that education is a prime instrument of national purpose and that quality of education is inescapably involved in the quality of the nation.

इसके निरंतर नवीनीकरण की प्रक्रिया, वास्तव में, राष्ट्रीय संस्कृति और राष्ट्रीय चरित्र के विकास की प्रक्रिया है। यह शिक्षा का व्यवसाय है, जैसा कि मैं इसे देखता हूँ, इस निरंतर नवीनीकरण की सेवा करना; और मुझे यह अनुमान माफ किया जा सकता है कि इस उच्च पद के लिए मेरी पसंद मुख्य रूप से, यदि पूरी तरह से नहीं, तो मेरे लोगों की शिक्षा के साथ मेरे लंबे जुड़ाव के कारण हुई है। मेरा मानना है कि शिक्षा राष्ट्रीय उद्देश्य का एक प्रमुख साधन है और शिक्षा की गुणवत्ता अनिवार्य रूप से राष्ट्र की गुणवत्ता में शामिल है।

Paragraph 5. I, therefore, pledge myself to the loyalty of our past culture from wheresoever it may have come and by whomsoever it may have been contributed. I pledge myself to the service of the totality to my country's culture. I pledge my loyalty to my country, irrespective of religion or language; I pledge myself to work for its strength and progress and for the welfare of its people without distinctions of caste, colour or creed. The whole of Bharat is my home and its people are my family. The people have chosen to make me the head of this family for a certain time. It shall be my earnest endeavour to seek to make this home strong and beautiful, a worthy home for a great people engaged in the fascinating task of building up a just and prosperous and graceful life.

इसलिए, मैं अपनी पिछली संस्कृति की वफादारी की प्रतिज्ञा करता हूँ, चाहे वह कहीं से भी आई हो और जिसने भी इसमें योगदान दिया हो। मैं अपने देश की संस्कृति की समग्रता की सेवा के लिए खुद को प्रतिबद्ध करता हूँ। मैं अपने देश के प्रति अपनी निष्ठा की प्रतिज्ञा करता हूँ, चाहे वह किसी भी धर्म या भाषा का हो; मैं अपनी शक्ति और प्रगति के लिए और जाति, रंग या पंथ के भेदभाव के बिना अपने लोगों के कल्याण के लिए काम करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। पूरा भारत मेरा घर है और इसके लोग मेरा परिवार हैं। लोगों ने मुझे एक निश्चित समय के लिए इस परिवार का मुखिया बनाना चुना है। इस घर को मजबूत और सुंदर बनाने का मेरा पूरा प्रयास होगा, एक न्यायपूर्ण और समृद्ध और सुंदर जीवन के निर्माण के आकर्षक कार्य में लगे महान लोगों के लिए एक योग्य घर।

Paragraph 6. The family is big and is constantly growing at a rather inconveniently fast pace. We shall, each one of us, have to participate unsparingly in building its new life, each in his own way. For sheer size the tasks ahead of us are so demanding that no one can afford to sit back and just watch or let frustration become endemic in our country. The situation demands of us work, work and more work, silent and sincere work, solid and steady reconstruction of the whole material and cultural life of our people.

परिवार बड़ा है और लगातार असुविधाजनक रूप से तेज गति से बढ़ रहा है। हमें, हम में से प्रत्येक को, अपने-अपने तरीके से, इसके नए जीवन के निर्माण में पूरी तरह से भाग लेना होगा। विशाल आकार के लिए हमारे आगे के कार्य इतने मांग वाले हैं कि कोई भी वापस बैठकर हमारे देश में निराशा को देखने या देखने का जोखिम नहीं उठा सकता है। स्थिति हमसे काम, काम और अधिक काम, मूक और ईमानदार काम, हमारे लोगों के संपूर्ण भौतिक और सांस्कृतिक जीवन के ठोस और स्थिर पुनर्निर्माण की मांग करती है।

Paragraph 7. This work, as I see it, has two aspects: work on one's self and work for the society around. They are mutually fruitful aspects of work. The work on one's self is to follow the urge towards moral development as a free person and under self-imposed discipline, which alone can render that development possible. Its end-product is a free moral personality. We can neglect the end-product only at our peril. This end-product cannot sustain itself without seeking and exercising itself to bring about the approximation of the society to which it is privileged to serve to a better, a juster and a more graceful way of life. The individual cannot grow in full perfection without a corresponding advance of the collective social existence. Let us resolve to get whole heartedly engaged in these two aspects of work-individual and social.

जैसा कि मैं देख रहा हूँ, इस काम के दो पहलू हैं: स्वयं पर काम करना और आसपास के समाज के लिए काम करना। वे काम के पारस्परिक रूप से उपयोगी पहलू हैं। स्वयं पर कार्य एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नैतिक विकास की इच्छा का पालन करना और आत्म-लगाए गए अनुशासन के तहत है, जो अकेले उस विकास को संभव बना सकता है। इसका अंतिम उत्पाद एक स्वतंत्र नैतिक व्यक्तित्व है। हम अपने जोखिम पर ही अंतिम उत्पाद की उपेक्षा कर सकते हैं। यह अंतिम उत्पाद समाज के उस सन्निकटन को लाने के लिए खुद को तलाश और प्रयोग किए बिना खुद को बनाए नहीं रख सकता है, जिसके लिए इसे बेहतर, न्यायपूर्ण और अधिक सुंदर जीवन शैली की सेवा करने का विशेषाधिकार प्राप्त है। सामूहिक सामाजिक अस्तित्व की तदनु रूप उन्नति के बिना व्यक्ति पूर्ण पूर्णता में विकसित नहीं हो सकता। आइए हम काम के इन दो पहलुओं-व्यक्तिगत और सामाजिक में पूरे मन से लगे रहने का संकल्प लें।

Paragraph 8. This dual effort will give to the life of our State a special flavour. For the State to us will not be just an organisation of power but a moral organisation. It is a part of national temperament and inheritance from the great leader of our liberation movement, Mahatma Gandhi, that power should be used only for moral purposes. The peace of the strong is what we shall dedicate ourselves to work for.

यह दोहरा प्रयास हमारे राज्य के जीवन को एक विशेष स्वाद देगा। हमारे लिए राज्य केवल सत्ता का संगठन नहीं बल्कि नैतिक संगठन होगा। यह हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के महान नेता महात्मा गांधी से राष्ट्रीय स्वभाव और विरासत का एक हिस्सा है, कि शक्ति का उपयोग केवल नैतिक उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए। ताकतवर की शांति वह है जिसके लिए हम काम करने के लिए खुद को समर्पित करेंगे।

Paragraph 9. I have full faith in my people that they will bring forth the energy requisite for the satisfactory performance of this dual task. It shall be my privilege to contribute my share to this enchanting enterprise.

मुझे अपने लोगों पर पूरा विश्वास है कि वे इस दोहरे कार्य के संतोषजनक प्रदर्शन के लिए आवश्यक ऊर्जा को सामने लाएंगे। इस आकर्षक उद्यम में अपने हिस्से का योगदान करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी।